इकाई 3 आर्थिक विश्लेषण की विधियाँ

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 विषय प्रवेश
3.2 आंशिक एवं व्यापक संतुलन में भेद
3.3 स्थैतिक एवं गत्यात्मक विश्लेषण
3.4 आर्थिक सिद्धांतों की रचना एवं सत्यता की जाँच
3.5 आर्थिक सिद्धांत एवं नियम
3.6 स्टाक चर तथा प्रवाह चर
3.7 सारांश
3.8 शब्दावली
3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

3.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको निम्न बातों से परिचित कराया जा रहा है:

- विश्लेषण की आंशिक एवं व्यापक संतुलन विधियों में भेद;
- आर्थिक सिद्धांतों तथा आर्थिक नियमों में भेद (यदि हो तो);
- स्टाक चर तथा प्रवाह चर में भेद; और
- जाँच की वैज्ञानिक पद्धति द्वारा आर्थिक सिद्धांतों की रचना करना।

3.1 विषय प्रवेश

इस इकाई में हम आर्थिक विश्लेषण की विधियों की चर्चा को और आगे बढ़ा रहे हैं। हम पहले तो आंशिक और व्यापक संतुलन के बारे में बातचीत करेंगे। आंशिक संतुलन विधि में केवल एक बाज़ार के अपने संतुलन पर ही सारा ध्यान केंद्रित रहता है मानो बाकी अर्थव्यवस्था का अस्तित्व ही न हो। दूसरी ओर, व्यापक संतुलन अर्थव्यवस्था के सभी बाज़ारों में एक साथ समन्वित रूप से संतुलन की प्राप्ति की ओर हमारा ध्यान केंद्रित कराता है। अर्थशास्त्रियों को आवश्यकतानुसार दोनों ही विधियों का प्रयोग करना पड़ता है। किसी समस्या को ठीक से समझने के लिए व्यापक संतुलन विधि से विश्लेषण आवश्यक होता है तो किसी प्रश्न पर आंशिक विश्लेषण विधि से आवश्यक प्रकाश डाला जा सकता है। इस बारे में और विस्तार से हम भाग 3.2 में चर्चा करेंगे।

हम विश्लेषण की विधियों के स्वरूप में एक अन्य दृष्टि से भी भेद करते हैं। कुछ विधियाँ एक स्थिति विशेष की जानकारी देती हैं। इन्हें स्थैतिक विधियाँ कहा जाता है। कुछ अन्य विधियाँ स्थितियों में परिवर्तन के अध्ययन में उपयोगी रहती हैं। उन्हें हम गत्यात्मक विश्लेषण विधियों का नाम देते हैं। आंशिक विश्लेषण की भाँति ही स्थैतिक विश्लेषण अपेक्षाकृत आसान रहता है जबकि व्यापक संतुलन तथा गत्यात्मक विश्लेषण में काफी जटिलताओं का सामना करना पड़ता है।

हम विश्लेषण विधियों की चर्चा का समापन आर्थिक सिद्धांतों के निर्माण और उनकी सत्यता की जाँच से करेंगे। आपको याद होगा कि हमने इकाई 1 में अर्थशास्त्र की परिभाषा विज्ञान के रूप में की थी। यहाँ हम आर्थिक सिद्धांतों की रचना तथा उनकी सत्यता की जाँच में जाँच की वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करेंगे। साथ ही साथ हम एक सिद्धांत तथा नियम का भेद भी समझाएँगे।

यहाँ पर एक प्रश्न उठता है : क्या अर्थशास्त्र के सिद्धांत में कभी कोई परिवर्तन नहीं आता? यहाँ इस बात पर ध्यान दिलाना आवश्यक हो जाता है कि किसी सिद्धांत की रचना के पीछे दो उद्देश्य होते हैं : वर्तमान घटनाक्रम की व्याख्या करना तथा भविष्य के घटनाक्रम का पूर्वानुमान लगाना।

इस इकाई के अंत में हम स्टाक चर तथा प्रवाह चर के बीच अंतर समझाएँगे। समष्टि एवं व्यष्टि अर्थशास्त्र में हमारा संबंध सामान्यतः प्रवाह चरों से ही पड़ता है। लेकिन बाज़ार दोनों प्रकार के चरों के ही होते हैं।

3.2 आंशिक एवं व्यापक संतुलन विश्लेषण (Partial Vs. General Equilibrium Analysis)

आंशिक संतुलन के विश्लेषण में हम शेष सारी अर्थव्यवस्था को अपरिवर्तनशील मानकर केवल एक बाज़ार पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। यदि हम गेहूँ के बाज़ार को भली प्रकार से समझना चाहते हैं तो अर्थव्यवस्था के अन्य बाज़ारों के विषय में सोचते तक नहीं। ऐसा विश्लेषण 'अन्य बातें स्थिर रहें की पूर्व धारणा' पर आधारित होता है। दूसरे शब्दों में, हम सारी अर्थव्यवस्था के अन्य सभी भागों का व्यवहार पूर्ववत् मानते हुए केवल गेहूँ के बाज़ार का अध्ययन करते हैं। इसी तरह से यदि वस्त्र बाज़ार का विश्लेषण करेंगे तो स्थिर रहने वाली अन्य सभी चीज़ों में गेहूँ का बाज़ार भी सम्मिलित हो जाएगा। इस प्रकार के अध्ययन में विभिन्न बाज़ारों के बीच अंतर्संबंधों को अनदेखा कर दिया जाता है। दूसरी ओर व्यापक संतुलन विश्लेषण में हम अर्थव्यवस्था के सभी बाज़ारों का एक साथ विश्लेषण करते हैं। यहाँ आधारभूत मान्यता यह है कि प्रत्येक बात हर दूसरी बात पर आधारित है। अर्थव्यवस्था के सभी बाज़ार इस प्रकार से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं कि एक बाज़ार के उतार-चढ़ाव का प्रभाव सारी अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसी स्थिति में अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली का अध्ययन व्यापक संतुलन विधि से ही भली प्रकार संभव हो पाएगा। वास्तव में आंशिक और व्यापक विश्लेषण विधियाँ अर्थव्यवस्था की ओर देखने के दो दृष्टिकोण हैं।

जब हमारा उद्देश्य किसी विशेष बाज़ार या क्षेत्र के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना हो तो आंशिक विश्लेषण विधि का प्रयोग उचित रहता है। आंशिक संतुलन का प्रयोग उस समय करते हैं जब हम यह मानकर चलें कि बाज़ार अपने आप में सम्पूर्ण है, या इसका अन्य बाज़ारों से कोई संबंध नहीं है, अथवा शेष अर्थव्यवस्था की तुलना में यह बहुत ही छोटा-सा बाज़ार है, या फिर इस बाज़ार का बाकी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव न के बराबर होता है। आंशिक विश्लेषण में किसी भी समस्या को समझना बहुत सहज हो जाता है। व्यापक संतुलन विश्लेषण जटिल होता है क्योंकि वास्तविकता जटिल होती है। इसे समझने के लिए कुछ न कुछ सरलीकरण अनिवार्य हो जाते हैं। आंशिक अध्ययन विधि एक ऐसा ही सरलीकरण है जिसमें प्रत्येक बाज़ार को अपने आप में अलग माना जाता है। आंशिक संतुलन विश्लेषण का विचार अल्फ्रेड मार्शल (1890) ने सुझाया था और उन्हीं ने "अन्य बातें पूर्ववत् रहने" की मान्यता पर बल दिया था। इस पूर्वधारणा के कारण बाज़ार और शेष अर्थव्यवस्था के बीच के सभी संबंधों को नज़रअंदाज कर देते हैं। हम प्रत्येक बाज़ार को अन्य बाज़ारों से अलग मानकर यह दिखाते है कि माँग पूर्ति की शक्तियाँ किस प्रकार संतुलन

कीमत और मात्रा निर्धारित करती है। हालाँकि, एक बाज़ार का अन्य बाज़ारों पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। जब अन्य बाज़ारों पर पड़ रहे ये प्रभाव महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं, तो आंशिक संतुलन विश्लेषण उपयुक्त नहीं बैठता। अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले अन्य प्रभावों को न लेकर, आंशिक संतुलन विश्लेषण एक बाज़ार में परिवर्तन से होने वाले प्रभावों का सही चित्र प्रस्तुत नहीं कर पाता। बाज़ार प्रणाली के कार्य समझने के लिए आंशिक संतुलन विधि उसी दशा में उपयुक्त रहती है जबकि एक बाज़ार के प्रभाव या तो बहुत मामूली हो या फिर शेष अर्थव्यवस्था से इसका कोई विशेष संबंध न हो। अन्यथा व्यापक संतुलन विधि ही उपयुक्त रहती है।

आंशिक संतुलन विश्लेषण उसी दशा में ठीक रहता है जबकि बाज़ारों की परस्पर निर्भरता या संबंधों की अनदेखी करें या फिर ये हों ही नहीं। लेकिन यदि ये संबंध और निर्भरताएँ विद्यमान हैं और महत्त्वपूर्ण हैं, तो इनकी अनदेखी करना गंभीर होगा क्योंकि इससे भविष्य में होने वाली आर्थिक घटनाओं का अंदाजा ठीक-ठीक नहीं लग पाएगा। ऐसी स्थिति में व्यापक संतुलन विश्लेषण ही ठीक रहता है। जहाँ किसी घटना के व्यापक प्रभावों की पहले से ही आशा हो तो वहाँ निश्चित रूप से व्यापक संतुलन विधि का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) यदि किसी नगर में दूध बाज़ार की कार्यप्रणाली का विस्तृत अध्ययन करना हो तो आप किस विश्लेषण विधि का प्रयोग करेंगे?

.....

.....

2) वाहनों के लिए माँग बढ़ने पर इस्पात की माँग बढ़ जाती है जिसके फलस्वरूप अल्यूमीनियम और रबड़ आदि की माँग बढ़ती है। यह आंशिक संतुलन विधि का उदाहरण है या व्यापक संतुलन विधि का?

.....

.....

3.3 स्थैतिक और गत्यात्मक विश्लेषण (Static and Dynamic Methods of Analysis)

स्थैतिक और गत्यात्मक विधियाँ आर्थिक विश्लेषण की दो विधियाँ हैं। इनके बीच कई प्रकार से भेद किया जा सकता है। एक मत के अनुसार स्थैतिक विधि से संबंधित चर (कारण-प्रभाव) समय से जुड़े नहीं होते। जैसे बाज़ार का माँग-पूर्ति प्रतिमान (model) एक स्थैतिक प्रतिमान है। इस प्रतिमान में तीन संबंध हैं : माँग वस्तु की अपनी कीमत पर निर्भर करती है; पूर्ति वस्तु की अपनी कीमत पर निर्भर करती है; संतुलन पर माँग तथा पूर्ति एक समान होते हैं। इन तीनों में समय का कोई स्थान नहीं है। इसी मत के अनुसार एक गत्यात्मक विश्लेषण वह होता है जिसमें माँग और पूर्ति के संबंध समय पर भी आश्रित हों। यदि हम माँग पूर्ति प्रतिमान को निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत करें तो यह गत्यात्मक विश्लेषण का रूप ले लेता है।

$$D_t = f(P_t)$$
$$S_t = g(P_t)$$
$$D_t = S_t$$

यहाँ 't' समय की इकाई है।

कुछ अन्य अर्थशास्त्रियों का मत है कि केवल समय पर आश्रित होने से ही विश्लेषण गत्यात्मक नहीं हो जाता। समय पर आश्रित होने के साथ-साथ इसमें समय पश्चता **(time lag)** का होना भी आवश्यक है। अतः इस विचार के अनुसार एक गत्यात्मक प्रतिमान का स्वरूप कुछ इस प्रकार होगाः

$$D_t = f(P_t)$$

$$S_t = g(P_{t-1})$$

$$D_t = S_t$$

माँग संबंध में किसी प्रकार की समय पश्चता नहीं है। **'t'** समय की माँग तात्कालिक **'t'** समय की कीमत पर निर्भर करती है किन्तु पूर्ति संबंध में समय पश्चता है। इससे यह प्रतिमान गत्यात्मक बन जाता है। **'t'** अवधि की पूर्ति पिछली अवधि **'t-1'** की कीमत पर निर्भर है। **'t-1'** अवधि में प्रचलित कीमत ने उत्पादकों को पूर्ति बढ़ाने या घटाने के जो संकेत दिए थे, उनका पूरा प्रभाव वर्तमान अवधि **'t'** में ही प्रकट होता है। **'t'** अवधि में बाज़ार के संतुलन के लिए यह आवश्यक है कि **'t'** अवधि की माँग **'t'** अवधि की पूर्ति के समान हो।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि यदि हम किसी एक वस्तु के बाज़ार के संतुलन को ही देखना चाहते हैं तो हमें स्थैतिक विधि का ही प्रयोग करना होगा। संतुलन एक स्थैतिक अवधारणा है। यह बाज़ार की ऐसी स्थिति को दर्शाता है जिसमें कोई उतार-चढ़ाव नहीं होता। इसके विपरीत असंतुलन का विश्लेषण निश्चित रूप से गत्यात्मक विश्लेषण है। यह बाज़ार की उस स्थिति को दिखाता है जिसमें बाज़ार विभिन्न प्रक्रियाओं के द्वारा संतुलन की ओर पुनःस्थापित होता है। इसमें हम इस बात का विश्लेषण करते हैं कि समय के साथ-साथ बाज़ार में समंजन किस प्रकार हो रहा है। एक स्थैतिक स्थिति में हम यह मानकर चलते है कि बाज़ार में समंजन तुरंत हो जाता है और संतुलन या असंतुलन की स्थिति बिना कोई समय खोये प्राप्त हो जाती है। स्थैतिक विश्लेषण में इस बात से कोई मतलब नहीं होता कि असंतुलन की स्थिति में आर्थिक एजेंट किस प्रकार व्यवहार करते हैं। यहीं से गत्यात्मक विश्लेषण की भूमिका शुरू होती हैं। कई बार हम बहिर्जात शक्तियों में परिवर्तन से पहले और बाद के संतुलनों की तुलना करते हैं। इस विधि को तुलनात्मक स्थैतिक **(comparative statics)** विधि कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि माँग में वृद्धि का कारों की कीमतों पर प्रभाव जानना हो तो हम दो संतुलन अवस्थाओं– माँग में वृद्धि से पूर्व और इसके पश्चात की तुलना कर सकते हैं। इन दोनों संतुलन व्यवस्थाओं के बीच में क्या कुछ घटित हुआ, इस विषय में स्थैतिक विश्लेषण हमें कोई जानकारी नहीं देता। किंतु गत्यात्मक विश्लेषण की विधि हमें एक संतुलन अवस्था से दूसरी संतुलन अवस्था तक बाज़ार की स्थिति का पूरा ज्ञान कराती है।

बोध प्रश्न 3

3) यदि

i) $Q^D_x = a\text{-}b;$

ii) $P_x \, Q^s_t = f(P_t);$

iii) $Q^s_t = f(Pt\text{-}1)$

क्या ये प्रतिमान स्थैतिक हैं अथवा गत्यात्मक?

....

....

3.4 आर्थिक सिद्धांत की रचना एवं सत्यता की जाँच

एक आर्थिक सिद्धांत की रचना में निम्नलिखित चरण लिए जाते है :

1) जिस आर्थिक व्यवहार की जाँच हम करना चाहते है, उसके बारे में हम पहले एक परिकल्पना (hypothesis) करते हैं। यह परिकल्पना, जो कुछ हम अपने आसपास देखते हैं, उस पर आधारित होती है। उदाहरण के लिए यदि हम चाय की बाज़ार कीमत और उसकी माँग के संबंध की जाँच करना चाहते हैं, तो यह परिकल्पना कर सकते हैं कि कीमत और माँग में विपरीत संबंध होता है।

2) परिकल्पना में निहित संबंधों के बारे में एक आर्थिक मॉडल (यानि सिद्धांत) प्रतिपादित करते है। इसमें कारण-प्रभाव संबंध विकसित करने के लिए निगमन तर्क (deductive reasoning) का सहारा लेते हैं। इसमें 'यदि ऐसा हुआ तो ऐसा होगा' में निहित संबंधों की व्याख्या की जाती है। ऐसे सिद्धांत को विकसित करने में हमें कल्पना का सहारा लेना पड़ता है। क्योंकि वास्तविकता तो बहुत ही जटिल होती है। वास्तविक व्यवहार को समझाने के लिए सरलीकरण करना पड़ता है। अनावश्यक बातों को छोड़कर केवल आवश्यक बातों को ही शामिल किया जाता है। ऐसा मॉडल को सीमा में रखने के लिए भी करना पड़ता है। ऐसा एक मॉडल यानि प्रतिमान माँग का गणन-उपयोगिता (cardinal utility) सिद्धांत है।

3) अगले चरण में प्रतिमान को परिकल्पना पर लागू कर विचाराधीन अध्ययन के विषय में कुछ निष्कर्ष निकालते हैं। उदाहरण के तौर पर गणन में हमें यह पता चलता है कि अगर उपभोक्ता ज्यादा मात्रा में उपभोग करता है तो सीमांत उपयोगिता कम होने लगती है। अतः यदि कीमत कम नहीं की जाएगी तो उपभोक्ता अधिक मात्रा की माँग करेगा ही नहीं। (क्योंकि सिद्धांत में यह निहित है कि कीमत सीमांत उपयोगिता को दिखाती है)। अतः, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कीमत कम होने पर उपभोक्ता वस्तु की ज्यादा मात्रा की माँग करता है। पहले चरण में यही तो हमारी परिकल्पना थी।

4) अंतिम चरण में प्रतिमान से निकाले गए निष्कर्षों को आँकड़ों की कसौटी पर परखा जाता है। दूसरे शब्दों में, इन निष्कर्षों का वास्तविकता से मिलान किया जाता है। आँकड़ों के आधार पर किसी सिद्धांत की परख के लिए हमें सांख्यिकीय अथवा अर्थमिति (econometric) की विधियों का प्रयोग कर यह देखना पड़ता है कि क्या आँकड़े हमारे सिद्धांत द्वारा दर्शाए गए संबंधों की पुष्टि करते है। यदि ये आँकड़े पुष्टि करते है तो हम सिद्धांत स्वीकार कर लेते हैं। यदि हमारे निष्कर्ष आँकड़ों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते तो हम या तो उस सिद्धांत को पूरी तरह रद्द कर देते हैं या उसमें कुछ परिवर्तन कर दुबारा उसकी सत्यता की जाँच की प्रक्रिया प्रारंभ करते हैं। यह प्रक्रिया तब तक दोहरानी पड़ती है जब तक कि हम किसी ऐसे सिद्धांत पर न पहुँच जाएँ जिसके निष्कर्ष वास्तविक आँकड़ों से मेल खाते हों।

3.5 आर्थिक सिद्धांत और आर्थिक नियम

एक प्रतिमान में विभिन्न आर्थिक चरों के बीच संबंधों का वर्णन किया जाता है। जब एक परिकल्पना की सफलतापूर्वक जाँच हो जाती है तो यह सिद्धांत का रूप ले लेती है। किसी भी सिद्धांत के दो उद्देश्य होते है : व्याख्या करना और पूर्वानुमान लगाने में सहायक होना।

एक ऐसा आर्थिक सिद्धांत जो समान परिस्थितियों में खरा उतरे एक आर्थिक नियम कहलाता है। माँग का नियम ऐसा ही एक उदाहरण है।

बोध प्रश्न 3

1) निम्न वाक्यांशों पर ध्यान दें और बताएँ कि इनमें से कौन-सा वाक्यांश एक सिद्धांत या नियम है?

   i) उपभोग आय पर निर्भर करता है।

   .....

   .....

   ii) जब प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है तो जनसंख्या बढ़ जाती है।

   .....

   .....

3.6 स्टाक चर तथा प्रवाह चर (Stock Variable and Flow Variable)

अर्थशास्त्र में हम दो प्रकार के चरों का प्रयोग करते है : स्टाक चर तथा प्रवाह चर। जिसमें भी परिवर्तन होता है वह एक चर कहलाता है। उदाहरण के रूप में हम कीमत, माँग, पूर्ति, आय, निवेश, निर्यात, आयात, रोज़गार, उत्पादन-लागत, लाभ आदि सभी चर हैं। पर इन चरों में उतार-चढ़ाव का पता तो तभी चलेगा जब इनका संबंध अवधि से जोड़ा जाए। यह अवधि एक दिन, सप्ताह, महीना या वर्ष आदि कुछ भी हो सकती है। स्टाक चर तथा प्रवाह चर दोनों एक निश्चित समय से बंधें है। अंतर केवल इतना है कि प्रवाह चर में समय अवधि तथा समय बिंदु दोनों होते हैं जबकि स्टाक चर का संबंध समय के एक निश्चित बिंदु से होता है।

उदाहरण के लिए पूँजी एक स्टाक चर है क्योंकि इसकी कोई समय अवधि नहीं है बल्कि केवल एक समय बिंदु है जैसे कि एक जनवरी 1996 को पूँजी का स्टाक। दूसरी ओर निवेश एक प्रवाह है क्योंकि इसको समय की एक इकाई में व्यक्त किया जाता है जैसे 10 प्रतिशत प्रति वर्ष। स्टाक और प्रवाहों के बीच गहरा संबंध है। उदाहरण के लिए दो समय बिंदुओं 1.1.96 और 31.12.96 के बीच का अंतर 1.1.96 से लेकर 31.12.96 तक की अवधि का प्रवाह कहलाता है। ये प्रवाह ही स्टाक में वृद्धि लाते हैं या फिर इसे कम करते हैं। उदाहरणतः, 31.12.96 को पूँजी भण्डार 1.1.96 को पूँजी भंडार तथा 1.1.96 से लेकर 31.12.96 तक किए गए निवेश (मूल्यहास घटाकर) का योग होता है।

स्टाक तथा प्रवाह का महत्त्व इसमें भी है कि दोनों ही के लिए बाज़ार होते हैं। व्यष्टि अर्थशास्त्र में हमारा संबंध मुख्यतः प्रवाहों से ही रहता है।

बोध प्रश्न 4

1) इन दोनों वाक्यांशों पर गौर करें और बताए कि इनमें स्टाक चर और प्रवाह चर वाक्यांश कौन-कौन से है?

   i) स्फीति-दर, ब्याज दर, मुद्रा पूर्ति, जनसंख्या।

   .....

   .....

   .....

   ii) गेहूँ की माँग, गेहूँ की आपूर्ति।

   .....

   .....

   .....

3.7 सारांश

इस इकाई में भी हम अर्थशास्त्र की विश्लेषण पद्धति आदि से जुड़ी बातों पर ही चर्चा करते रहे हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि व्यष्टि अर्थशास्त्र में मूलतः आंशिक विश्लेषण विधि का प्रयोग होता है जबकि समष्टि अर्थशास्त्र में अधिकांशतः व्यापक विश्लेषण विधि। का इन दोनों में भेद भी विस्तार से समझाया गया है। आंशिक विश्लेषण अन्य बाते स्थिर या पूर्ववत् रहने की मान्यता पर आधारित रहता है जबकि व्यापक संतुलन 'हर कुछ बाकी सब कुछ पर निर्भर है' पर आधारित है। स्थैतिक और गत्यात्मक विश्लेषणों में अंतर को भी स्पष्ट किया गया है। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि स्थैतिक समयहीन स्थिति के बारे में है। संतुलन विश्लेषण स्थैतिक है तो असंतुलन विश्लेषण गत्यात्मक। संतुलन की व्याख्या स्थैतिक है।

इस इकाई में अंत में हमने एक आर्थिक सिद्धांत के रचने और उसकी सत्यता की जाँच पर बातचीत की है। लॉयनेल रॉबिनस की अर्थशास्त्र की परिभाषा पर चर्चा करते समय इकाई 1 में भी इस विषय का जिक्र किया था। आर्थिक सिद्धांतों की रचना में हम निगमन तर्क की सहायता लेते है। आर्थिक सिद्धांतों के निष्कर्षों की सत्यता की परख अर्थमिति की वैज्ञानिक विधि द्वारा करना आवश्यक है। यह आवश्यक नहीं कि इस परख में शत-प्रतिशत सफलता मिले ही।

3.8 शब्दावली

आंशिक संतुलन : अन्य सभी बातों को अनदेखा करते हुए किसी एक बाज़ार के संतुलन का विश्लेषण। इसमें अर्थव्यवस्था के विभिन्न बाज़ारों के बीच अंतर्संबंधों को ध्यान में नहीं रखा जाता।

आर्थिक नियम	:	ऐसे आर्थिक सिद्धांत जो समान परिस्थितियों में सदा सही सिद्ध हों आर्थिक नियम कहलाते हैं ।
आर्थिक सिद्धांत	:	आर्थिक इकाइयों के बीच कारण प्रभाव संबंध को बताने वाला प्रतिमान । सत्यता की जाँच की कसौटी पर खरी उतरी परिकल्पना सिद्धांत का रूप धारण कर लेती है ।
गत्यात्मक	:	जब चर समय से जुड़े होते हैं । समय के साथ-साथ इनमें परिवर्तन आता है ।
प्रवाह	:	प्रति इकाई समय के अनुसार व्यक्त चर । इसमें समय अवधि और समय बिन्दु दोनों होते हैं ।
व्यापक संतुलन	:	अर्थव्यवस्था के सभी बाज़ारों का समन्वित संतुलन विश्लेषण । विश्लेषण की इस जटिल पद्धति में सभी बाज़ारों को परस्पर निर्भर और संबंधित माना जाता है ।
संचय-या स्टॉक	:	किसी विशेष समय बिंदु पर एक चर का मान । इसमें केवल समय बिंदु होता है ।
स्थैतिक	:	एक समयहीन स्थिति का अध्ययन । यहाँ सभी चर समयहीन होते हैं ।

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

रिचर्ड लिप्से : *इन्ट्रोडक्शन टु पॉजिटिव इक्नॉमिक्स* (नवीनतम संस्करण)

डोमिनिक साल्वाटोर : *माइक्रोइकनॉमिक थ्यौरी*, शॉम सिरीज़ (तृतीय संस्करण)

डी.बेग, आर.डॉर्नविश्, एस.फिशर : *इक्नॉमिक्स* (चतुर्थ संस्करण)

डी.साल्वाटोर : *माइक्रोइक्नॉमिक्स*, द्वितीय संस्करण, हार्पर कोलिन्स

डब्ल्यु. निकल्सन : *इन्टरमीडिएट माइक्रोइक्नॉमिक्स*, छठा संस्करण

टिमोथी ट्रीअर्थन : *माइक्रोइक्नॉमिक्स*, प्रथम संस्करण, 1996

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

बोध प्रश्न 1

1) आंशिक संतुलन,

2) व्यापक संतुलन विश्लेषण

बोध प्रश्न 2

1) i) स्थैतिक

ii) स्थैतिक

iii) गत्यात्मक

बोध प्रश्न 3

1) i) एक सिद्धांत

ii) एक नियम के अधिक निकट है।

बोध प्रश्न 4

1) i) प्रवाह, प्रवाह, स्टाक, स्टाक

ii) प्रवाह एवं स्टाक दोनों ही।